महामारी मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम (पश्चिमी राजस्थान 1984 असम 1995)

राजस्थान एवं असम में महामारी मलेरिया नियंत्रण कार्यक्रम के दौरान क्रमशः लगभग 3600 एवं 10,000 प्लाज्मोडियम विवेक्स रोगियों की चिकित्सा की गई। प्रायः सभी रोगियों के निदान चिकित्सात्मक लाभों का निरीक्षण किया गया।कुछ रोगियों में धनात्मक प्लाज्मोडियम फेल्सीपैरम तथा कुछ में परजीवी शमन एवं निदान चिकित्सात्मक लाभ पाया गया।

मलेरिया कार्मुकताओं के अतिरिक्त यह औषधि ज्वर में अज्ञात कारणों फायलेरियल (फीलपांव) रोगों एवं यकृत रोगों में भी प्रभावकारी पायी गयी।

दुष्परिणाम – कोई भी दुष्परिणाम/विषाक्त प्रभाव नहीं पाया गया।

अनुपान – निम्न मात्रा में अथवा चिकित्सक के परामर्शानुसार।

व्यस्क – 4 गोली, दिन में तीन बार, 5–7 दिन तक।

बच्चों को (5–12 वर्ष) – 2 गोली, तीन बार, 5–7 दिन तक।

शिशुओं को (5 वर्ष से कम) – 1 गोली का पाउडर शहद में मिलाकर, दिन में तीन बार।

आईपीआर स्थिति – पेटेन्ट संख्या–152863

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

महानिदेशक
केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथी अनुसंधान भवन
61-65 संस्थानिक क्षेत्र, 'डी' ब्लाक के सामने, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058
फोनः +91-11-28525520 / 28524457, फैक्सः +91-11-28520748
ई–मेल : dg-ccras@nic.in
वेबसाइट : www.ccras.nic.in / www.indianmedicine.nic.in

© सी.सी.आर.ए.एस. 2014
यह दस्तावेज केवल प्रचार, प्रसार एवं वितरण हेतु तैयार किया गया है, व्यावसायिक उपयोग के लिए नहीं। इस सामग्री का पुनरूपयोग सी.सी.आर.ए.एस. से अनुमति लेने के बाद ही किया जा सकता है।

आयुष - 64

मलेरिया नाशक आयुर्वेदीय योग

सप्तपर्ण

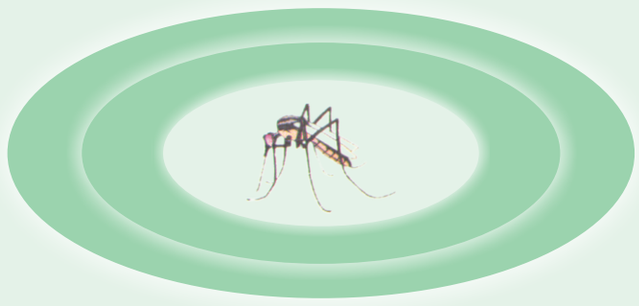

केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद्
आयुष मंत्रालय
(आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी)
भारत सरकार

मलेरिया नाशक आयुर्वेदीय योग

dqcsjk.k (*Caesalpinia crista Linn.*)

fpjk;rk (*Swertia chirata Buch-Ham*)

dVqdh (*Picrorhiza kurroa Royle*)

भूमिका

सभी तीव्र (उष्णकटिबन्धीय) बीमारियों में मलेरिया एक बहु प्रचलित, विनाशक एवं विस्तृत रूप से फैलने वाली बीमारी है तथा आयुर्वेदिक चिकित्सक इस बीमारी से प्राचीन समय से ही भली भांति परिचित रहे हैं। प्राचीन शास्त्रीय आयुर्वेदिक वाङ्मय में इसके लक्षणों, निदान चिकित्सात्मक वैशिष्ट्यों एवं चिकित्सा का विस्तृत उल्लेख विषमज्वर के अन्तर्गत किया गया है।मलेरिया परजीवियों में औषधियों के प्रतिरोध एवं स्थिति की गम्भीरता का अनुभव करते हुए केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद् ने आयुर्वेदिक औषधि के विकास की आवश्यकता महसूस की। फलतः विस्तृत भेषजगुणविज्ञानीय, विषाक्तता एवं निदान चिकित्सात्मक अध्ययनों के माध्यम से एक मलेरियारोधी औषधि आयुष–६४ का निर्माण किया। इसका राष्ट्रीय अनुसंधान विकास निगम, नई दिल्ली द्वारा पेटेंट भी किया गया है।

आयुष - 64

घटक द्रव्य

प्रत्येक गोली में:-

सप्तपर्ण	छाल का जलीय घनसत्व	100 मि.ग्रा.
कटुकी	जड़ का जलीय घनसत्व	100 मि.ग्रा.
चिरायता	सम्पूर्ण पादप का जलीय घनसत्व	100 मि.ग्रा.
कुबेराक्ष	बीज सत्व	200 मि.ग्रा.

भेषजगुण विज्ञानीय एवं विषाक्तता अध्ययन

इस अध्ययन में आयुष–64 की 500 मि.ग्रा. प्रति कि.ग्रा शरीर भार के अनुसार मात्रा 12 सप्ताह तक देने पर सुरक्षित एवं विषाक्तता रहित पायी गयी है

निदान चिकित्सात्मक अध्ययन

सामान्य निदान चिकित्सात्मक परीक्षण : विभिन्न अनुसंधान संस्थानों एवं देश के विभिन्न भागों में स्थित परिषदीय केन्द्रों के माध्यम से मलेरिया के 1442 रोगियों पर आयुष –64 का निदान चिकित्सात्मक परीक्षण किया गया। इस चिकित्सा द्वारा 89 प्रतिशत परिणाम अनुकूल पाया गया तथा मलेरियारोधी औषधियों–क्लोरोक्वीन एवं प्राइमाक्वीन से इसकी तुलना भी की गई।

डबल ब्लाइंड अध्ययन : बहिरंग रोगी विभाग एवं अंतरंग रोगी विभाग के माध्यम से 178 रोगियों पर डबल ब्लाइंड अध्ययन किया गया। परिणामस्वरूप 95.4 प्रतिशत रोगियों को इस औषधि से अनुकूल लाभ मिला। 5–7 दिनों तक औषधि के प्रयोग से तापमान सामान्य होने के साथ–मलेरिया परजीवी का शमन हो गया।

राष्ट्रीय मलेरिया उन्मूलन कार्यक्रम (हरियाणा एवं तमिलनाडु सरकार) के साथ सहयोगात्मक अध्ययन

466 रोगियों पर ये अध्ययन किए गये। फलतः इस औषधि के 5–7 दिनों के प्रयोग से परजीवी का शमन होता दिखाई दिया तथा 72–90 प्रतिशत रोगियों को निदान चिकित्सात्मक लाभ मिला।

मलेरिया नाशक आयुर्वेदीय योग